

अनुसंधान परिषद की 57^{वीं} बैठक की कार्यवृत्त
(केरेउअवप्रसं, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल में 27^{वीं} जुलाई 2021)

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर की अनुसंधान परिषद की 57^{वीं} बैठक दिनांक 27^{वीं} जुलाई, 2021 को संस्थान के निदेशक महोदय, डॉ. वी. शिवप्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी।

बैठक की प्रारंभ में, डॉ. दीपेश पंडित, वैज्ञानिक-डी (पीएमसीई) द्वारा बैठक में उपस्थित डॉ. वी. शिवप्रसाद [निदेशक व अध्यक्ष] समेत वैज्ञानिकों व अन्य प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। उपस्थित सदस्यों की सूची **अनुलग्नक – I** में संलग्न हैं।

मद सं. 1: केरेउअवप्रसं, बहरमपुर में दिनांक 8^{वीं} दिसम्बर, 2020 को आयोजित अनुसंधान परिषद की 56^{वीं} बैठक की कार्यवृत्त की पुष्टि।

अतः किसी भी सदस्य से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं होने की स्थिति में कार्यवृत्त को पुष्ट माना गया।

मद सं. 2: दिनांक 8^{वीं} दिसम्बर, 2020 को आयोजित अनुसंधान परिषद [आरसी] की 56^{वीं} बैठक में लिए गए सुझाव / निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई रिपोर्ट की समीक्षा।

मद सं. 3. संपन्न अनुसंधान परियोजनाओं / गतिविधियों की समीक्षा

निम्नलिखित शोध परियोजनाओं / गतिविधियों जो इस अवधि के दौरान संपन्न हुई हैं, उस पर चर्चा की गई।

पीआईबी 3627: पॉलीक्लोनल सीड ऑर्चर्ड के माध्यम से बेहतर शहतूत जीनोटाइप का विकास

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि भविष्य में उपयोग के लिए स्थापित पॉलीक्लोनल बीज बाग को बनाए रखने और संरक्षित करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। परियोजना व्यय में नियमित गतिविधियों की विभाजित लागत शामिल होनी चाहिए। आगे यह सलाह दी जाती है कि सीओ को आगे के प्रसारण के लिए निर्दिष्ट प्रारूप में समाप्त परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करें और इसे आगामी आरएसी में प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: श्री यल्लप्पा हरिजन, वैज्ञानिक-बी, एमबीजी]

पीआरपी 02003एसआई: पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत में शहतूत जड़ सड़न रोग के प्रबंधन पर अध्ययन।

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि डॉ अनिल पप्पचन के परामर्श से दक्षिणी और पूर्वी भारत के फुसैरियम के रोगजनक आइसोलेट्स के बीच आईटीएस क्षेत्रों में अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण करें और इसे आगामी आरएसी में प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: श्री खसरु आलम, वैज्ञानिक-बी, paudha संरक्षण]

एआईबी 3602: मार्कर असिस्टेड सिलेक्शन के माध्यम से थर्मोटोलरेंट बाइवोल्टाइन नस्लों / रेशमकीट के संकरों का विकास

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वे कॉपी नंबर सहित हाइब्रिड और एफसी आबादी में थर्मो-टॉलरेंस मार्कर की उपस्थिति से संबंधित परिणाम प्रस्तुत करें। सीओ को आगे संचरण के लिए निर्दिष्ट प्रारूप में समाप्त परियोजना रिपोर्ट जमा करें और आगामी आरएसी में इसे प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: डॉ. एन. चंद्रकांत, वैज्ञानिक-सी, एसबीजी]

एआरपी 3630: नए कमरे और रेशमकीट बिस्तर कीटाणुनाशक का मूल्यांकन

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि विकसित किए गए दो उत्पादों के लाभ: लागत अनुपात सहित प्राप्त आंकड़ों की एक व्यापक प्रस्तुतिकरण करें। विकसित कीटाणुनाशकों के व्यावसायीकरण के लिए संभावित उद्यमियों का पता लगाने की सलाह दी जाती है; सेरी-विन का आईपीआर दाखिल करना और सीओ को आगे के प्रसारण के लिए समाप्त परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करना और उसे आगामी आरएसी में प्रस्तुत करना।

[कार्रवाई: डॉ. के. राहुल, वैज्ञानिक-सी, और डॉ. मिहिर राभा एसडब्ल्यूपी]

मद संख्या 4: केरेवो फंडिंग के लिए नई अनुसंधान परियोजनाओं/अवधारणाओं का अनुमोदन

निम्नलिखित अवधारणा नोट को सदन द्वारा प्रस्तुत किया गया और इसकी समीक्षा की गई। निर्णय इस प्रकार है:

1.

षक: गैर-कोडिंग आरएनए मध्यस्थता वाले एपिजेनेटिक तंत्र का एक व्यापक विश्लेषण जो रेशमकीट में फ्लेचरी के खिलाफ प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को नियंत्रित करता है

अवलोकन/सुझाव: इस अवधारणा को सदन द्वारा सीएसबी के सभी शहतूत अनुसंधान एवं विकास संस्थानों के साथ नेटवर्किंग परियोजना के रूप में अनुमोदित किया गया है। पीआई को सलाह दी जाती है कि वे निर्धारित प्रारूप के अनुसार एक पूर्ण प्रस्ताव तैयार करें और उसे सीओ . को प्रस्तुत करें

[कार्रवाई: डॉ. ए.आर. प्रदीप, वैज्ञानिक-डी, जैव प्रौद्योगिकी]

मद सं.5: चल रही परियोजनाओं/पायलट अध्ययनों/गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा:

मुख्य संस्थान की निम्नलिखित चल रही परियोजनाओं/पायलट अध्ययन/टीओटी/अन्य अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों पर चर्चा की गई और सुझाव हैं:

पीआईबी 02007 एसआई: भारत के पूर्व और पूर्वोत्तर राज्यों में शहतूत के पत्तों की लंबी उम्र में सुधार

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को काम में तेजी लाने की सलाह दी जाती है ताकि मील के पत्थर को पूरा किया जा सके। आगे यह सलाह दी जाती है कि रंग की तीव्रता के आधार पर बुढ़ापा स्कोर करने के लिए अन्य विकल्पों का पता लगाएं। प्रेजेंटेशन में विजुअल स्कोरिंग से संबंधित चित्रों को दर्शाया जाना है।

[कार्रवाई: डॉ. दीपिका कुमार उमेश, वैज्ञानिक-बी, एमबीजी]

पीआरपी 08002एमआई: शहतूत में रोग प्रतिरोधक प्रजनन में उपयोग के लिए कैंडिडेट जीन आधारित पाउडर

फफूंदी प्रतिरोध की पहचान [संयोगी : एस.बी.आर.एल., कोडाथी]

प्राप्त प्रगति माइलस्टोन के अनुसार थी।

पीआईई 02002एसआई: लाल और लेटराइट के तहत शहतूत जीनोटाइप सी-9 के प्रदर्शन का मूल्यांकन

परियोजना के मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वह डेटा संग्रह में अस्पष्टताओं के बारे में समकक्ष (कोरापुट) के साथ चर्चा करें। पती की उपज में कमी के संभावित कारणों का संकेत देना होगा।

शहतूत की किस्मों के लिए अखिल भारतीय समन्वित प्रायोगिक परीक्षण (एआईसीईएम): चरण IV

प्राप्त प्रगति माइलस्टोन के अनुसार थी।

ओएसटी: उच्च उपज और कम तापमान तनाव सहिष्णु जीनोटाइप का मूल्यांकन (सी-1 और 11)

प्राप्त प्रगति माइलस्टोन के अनुसार थी।

ओएसटी: शहतूत के लिए कम लागत वाली ड्रिप फर्टिगेशन

पीआई को संबंधित केंद्रों के साथ अनुवर्ती कार्रवाई करने की सलाह दी जाती है, जहां कम लागत वाली ड्रिप फर्टिगेशन प्रणाली स्थापित नहीं की गई है और इसकी स्थापना के लिए आवश्यक उपाय करें।

ओएसटी: नई अधिकृत शहतूत किस्म C-2038 और अन्य को लोकप्रिय बनाना

मुख्य अन्वेषक को C-2038 को लोकप्रिय बनाने के लिए अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और छत्तीसगढ़ के किसानों का पता लगाने की सलाह दी जाती है।

पश्चिम बंगाल में इष्टतम रेशम उत्पादकता के लिए शहतूत फसल अनुसूची का विकास

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वे प्रत्येक फसल के मौसम और रीलिंग मापदंडों के तापमान और सापेक्ष आर्द्रता विवरण सहित व्यापक डेटा प्रस्तुत करें।

पीआईबी 02010 एसआई: ई एंड एनई इंडिया के लिए उच्च उपज वाले शहतूत जीनोटाइप का अंतिम उपज परीक्षण

प्रगति माइलस्टोन के अनुसार मिली

[कार्रवाई: डॉ. के. सुरेश, वैज्ञानिक-सी, एमबीजी]

नए पहचाने गए शहतूत जीनोटाइप का अंतिम उपज परीक्षण

प्रगति माइलस्टोन के अनुसार पाई गई। आरसीएस, केरेवो-बैंगलोर का पीआईबी 02010 एसआई के तहत एक समय में दो एफवाईटी लेने का प्रस्ताव पुनर्विचार के लिए प्रस्तुत किया जाना है क्योंकि दो फवाईटी के बीच एक वर्ष से अधिक का समय अंतराल है और अलग एफवाईटी कार्यक्रम के लिए सीओ-बैंगलोर से अनुरोध है।

[कार्रवाई: श्री यल्लप्पा हरिजन, वैज्ञानिक-बी, एमबीजी]

पीपीए02005एसआई: सिंचित स्थिति के तहत नई विकसित उच्च उपज देने वाली शहतूत किस्म (सी2038) के लिए दूरी और पोषक तत्वों की खुराक का अनुकूलन

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वे प्रतिनिधित्व की मानक इकाइयों का पालन करते हुए डेटा का प्रतिनिधित्व करें।

[कार्रवाई: श्री यल्लप्पा हरिजन, वैज्ञानिक-बी, एमबीजी]

डॉ. सतदल चक्रवर्ती, वैज्ञानिक-डी को सलाह दी जाती है कि वे बीज प्रौद्योगिकी / कृषि प्रबंधन या संबद्ध क्षेत्रों के विषयों में एक अवधारणा तैयार करें और अगले आरसी में प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: डॉ. सतदल चक्रवर्ती, वैज्ञानिक-डी, कृषि प्रबंधन]

शहतूत फसल संरक्षण के लिए नवीन कवकनाशी और कीटनाशक अनुप्रयोगों की सिफारिश

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि प्रस्ताव के संबंध में डॉ. अनिल पप्पचन से परामर्श करें और सीओ को सूचित करें।

शहतूत की सफेद मक्खी के पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन के लिए चेइलोमेनस सेक्समैकुलैटस और क्राइसोपरला ज़ास्त्रोवी सिलेमी प्रीडेटर का जीव विज्ञान और खिला प्रभावकारिता अध्ययन

अवधारणा के संबंध में आरसीसी बैठक में हुई चर्चा के अनुसार, यह राय थी कि शिकारी सामान्य जैविक एजेंट थे और सफेद मक्खी के प्रबंधन में प्रभावी नहीं थे। इसलिए, प्रस्ताव को आगे के अध्ययन के लिए नहीं लिया जा सकता है।

ओएफटी कार्यक्रम: जैव-नियंत्रण एजेंटों का प्रदर्शन (स्किमनस और क्राइसोपरला)

मुख्य अन्वेषक को माइलस्टोन के अनुसार कार्यक्रम जारी रखने की सलाह दी जाती है

नियमित कार्यक्रम: मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वे सीएसआरटीआई-वहरमपुर की नेस्टेड इकाइयों के साथ संवाद करें और संपर्क करें और नियमित रूप से रोग और कीट घटनाओं पर डेटा प्राप्त करें।

[कार्रवाई: श्री खसरु आलम, वैज्ञानिक-बी, पौधा संरक्षण]

ई एंड एनई इंडिया में उत्पादकता में सुधार के लिए एक पुरुष घटक के रूप में बेहतर बाइवोल्टाइन फाउंडेशन क्रॉस की पहचान

प्रगति के लिए मुख्य अन्वेषक को सराहना की गई, हालांकि अवधारणा केंद्रीय कार्यालय-बैंगलोर में विचाराधीन थी।

ओएफटी: डबल हाइब्रिड का मूल्यांकन। ई एंड एनई क्षेत्र में बीएचपी-डीएच (3.2x8.9)

मुख्य अन्वेषक को सीभी के साथ प्रासंगिक ग्राफ (प्रतिशत ग्राफ के बजाय) का उपयोग करके डेटा का प्रतिनिधित्व करने की सलाह दी जाती है।

[कार्रवाई: डॉ. वी. लक्ष्मणन, वैज्ञानिक-डी, एसबीजी]

एआईबी 02009 एमआई: प्राधिकरण परीक्षण रेशमकीट संकर, 12Y x BFC1 E & NE India में [Coll. एनएसएसओ और सीएसटीआरआई-बैंगलुरु के साथ परियोजना]

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वह डेटा के औसत प्रदर्शन को ग्राफिक रूप से प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: डॉ. एन. चंद्रकांत, वैज्ञानिक-सी, एसबीजी]

एआईबी 02006 एमआई: उत्तरजीविता और रेशम उत्पादकता के लिए निस्तारी लाइनों में सुधार

मुख्य अन्वेषक को सहयोगी सीआई के परामर्श से प्रयोगों की योजना बनाने और उन्हें निष्पादित करने की सलाह दी जाती है; इसकी प्रगति का संकलन करें और आगामी समीक्षा बैठकों में उपस्थित हों। आगे यह सलाह दी जाती है कि सभी निस्तारी लाइनों को बड़े पैमाने पर पीछे करें और रीलिंग लक्षणों का मूल्यांकन करें। जहां भी संभव हो, डेटा को ग्राफिक रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। यह भी सलाह दी जाती है कि एसएसपीसी-बेरहामपुर से एक वर्ष में सभी पांच बीज फसल मौसमों का डेटा प्राप्त करें और परियोजना में प्राप्त परिणामों की तुलना करें। एलएलडी डेटा प्रस्तुत करना होगा और मार्कर विश्लेषण शुरू करना होगा। थर्मो टॉलरेंस, ह्यूमिडिटी टॉलरेंस और एलएलडी के लिए मार्कर एनालिसिस को पीआई के साथ मॉटेन की जा रही बेहतर निस्तारी लाइन्स में करना होता है।

[कार्रवाई: डॉ. रंजीता देवी, वैज्ञानिक-बी, एसबीजी]

AIT 08005MI: मार्कर असिस्टेड ब्रीडिंग लाइन्स-फेज-II (एसबीआरएल-कोडाथी के कोल) से विकसित बिडेन्सोवायरस प्रतिरोधी रेशमकीट संकरों का विकास और मूल्यांकन

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि प्रस्तुत किए गए परिणामों में अस्पष्टता के संबंध में सहयोगी के साथ चर्चा करें। आगे यह सलाह दी जाती है कि सहयोगी से बिडेन्सोवायरस प्रतिरोधी नस्लों को प्राप्त करें और वायरल इनोक्यूलेशन अध्ययनों द्वारा चुनौती दें।

पूर्वी और उत्तर पूर्वी राज्यों के बीज और वाणिज्यिक फसल पालन की रेशमकीट रोग निगरानी

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि समय पर रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए संबंधित आरएसआरएस/आरईसी से संपर्क करें और संपर्क करें

ओएसटी: नए पर्यावरण के अनुकूल बिस्तर कीटाणुनाशक (सेरिविन) का सत्यापन
और

ओएफटी: बेहतर कोकून गुणवत्ता के लिए संपूर्ण का प्रदर्शन

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि दोनों ओएसटी की सामग्री को संबंधित परीक्षण स्थानों पर जल्द से जल्द वितरित करें ताकि आगामी फसलों में इसका उपयोग किया जा सके।

रेशमकीट फेकुली का उपयोग कर बायोडायनामिक तैयारी विकसित करने के लिए प्रोटोटाइप

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि रेफरी को पूरा प्रस्ताव भेजें और टिप्पणियां प्राप्त करें और आगामी आरएसी में इसे प्रस्तुत करें।

[कार्रवाई: डॉ. मिहिर राभा, विज्ञान-बी, एसडब्ल्यूपी]

शहतूत पारिस्थितिकी तंत्र में मिली बग के प्रबंधन के लिए माइक्रोबियल प्रौद्योगिकी

मुख्य अन्वेषक को 16S rRNA जीन अनुक्रमण विश्लेषण द्वारा पृथक जीवाणु संस्कृतियों की पहचान करने की सलाह दी जाती है।

एआईसी02004सिएन: रेशमकीट के फलैचरी रोग के खिलाफ शहतूत की पत्ती से पृथक कम आणविक भार पेप्टाइड्स की प्रभावकारिता का आणविक लक्षण वर्णन और मूल्यांकन (UNB सिलीगुडी के साथ सहयोग में)

मुख्य अन्वेषक को आयन एक्सचेंज क्रोमैटोग्राफी द्वारा कम आणविक भार लीफ पेप्टाइड्स के शुद्धिकरण से संबंधित कार्य को तेज करने की सलाह दी जाती है।

[कार्रवाई: डॉ. पूजा मकवाना, विज्ञान-सी, बायोटेक]

ओएसटी: चेक किस्म के रूप में सी-2038 के साथ उच्च उपज और जीवाणु पत्ती स्पॉट प्रतिरोधी जीनोटाइप सी7 का मूल्यांकन

प्राप्त प्रगति माइलस्टोन के अनुसार थी।

[कार्रवाई: श्री यल्लप्पा हरिजन, वैज्ञानिक-बी, एमबीजी]

एआईटी 02008 एसआई: पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत के लिए उच्च आर्द्रता सहिष्णु रेशमकीट नस्लों/संकरों की पहचान

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वे परियोजना में प्रस्तावित उपकरणों की खरीद के साथ अनुवर्ती कार्रवाई करें और डॉ. ए.आर. के परामर्श से जैव सूचनात्मक विश्लेषण जारी रखें। प्रदीप।

[कार्रवाई: डॉ. रविराज वी.एस., विज्ञान-बी, बायोटेक]

ओएफटी: संशोधित चरका (सुवर्ण) + सौरनीर का प्रदर्शन

मुख्य अन्वेषक को सुवर्णा और सोरोनियर की अपेक्षित इकाइयों के निर्माण के लिए उपयुक्त उद्यमियों को खोजने की सलाह दी जाती है। आगे इस पर चर्चा के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, सरगाछी जाने की सलाह दी जाती है।

[कार्रवाई: डॉ. एस. सरकार, विज्ञान-डी, प्रशिक्षण]

नाबार्ड वित्त पोषित परियोजना: चाँकी पालन में रेशम-उद्यमिता का विकास (एमडीबी-डब्ल्यूबी)

फंड (पहली किस्त) प्राप्त करने के बाद ही परियोजना शुरू की गई है और मील के पत्थर के अनुसार कुछ वस्तुओं की खरीद की गई है। पीआई को सलाह दी जाती है कि वे खरीदी गई सामग्री को संबंधित उद्यमी को वितरित करें और अन्य आवश्यक पालन सामग्री की योजना बनाएं और प्राप्त करें। मील के पत्थर के अनुसार परियोजना को भी लागू करें

ओएफटी: चावकी पालन को लोकप्रिय बनाना
और

ओएफटी: कोलैप्सिबल प्लास्टिक माउंटेज को लोकप्रिय बनाना और शूट फीडिंग (शेल्फ पालन)

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि वह उपरोक्त लोकप्रियकरण कार्यक्रमों की प्रगति में तेजी लाए।

[कार्रवाई: डॉ. शफी अफरोज, विज्ञान-सी, एसईईएम]

पश्चिम बंगाल में चुनौतियों और अवसरों पर विश्लेषण शहत्त और रेशम मूल्य श्रृंखला

सदन ने कहा कि पश्चिम बंगाल में प्रचलित रेशम उत्पादन परिदृश्य में यह अवधारणा संभव नहीं है। पीआई को आगे नई अवधारणा का प्रस्ताव करने की सलाह दी जाती है।

[कार्रवाई: डॉ. पी. नाइक, विज्ञान-बी, प्रशिक्षण]

कलिम्पोंग जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में किसानों की आजीविका सुरक्षा के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल का विकास

मुख्य अन्वेषक को सलाह दी जाती है कि परियोजना को पूरी तरह से संशोधित करें। नए मॉडल के विकास के बजाय, पीआई को सर्वोत्तम मौजूदा मॉडल की पहचान करने और उस मॉडल से आय सृजन का निर्धारण करने की सलाह दी जाती है। तदनुसार, कार्यप्रणाली को डॉ. जी श्रीनिवास, विज्ञान-डी के परामर्श से संशोधित करने और 31-07-2021 तक अवधारणा नोट जमा करने की आवश्यकता है।

[कार्रवाई: डॉ. एस. हरीश बाबू, विज्ञान-बी, आरएसआरएस-कालिम्पोंग]

धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई।

दिनांक: 06.08.2021

निदेशक और अध्यक्ष,
अनुसंधान परिषद

केरेउअवप्रसं, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल में दिनांक **27.07.2021** को आयोजित अनुसंधान परिषद की **57^{वीं}** बैठक में उपस्थित प्रतिभागियों की सूची

#	नाम	पदनाम	#
	डॉ. वी. शिवप्रसाद	निदेशक	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. भी.एस. लक्ष्मणन	वैज्ञानिक-डी, एसबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. एस. चट्टोपाध्याय	वैज्ञानिक-डी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. जी. श्रीनिवास	वैज्ञानिक-डी, एसईईएम प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. ए. आर. प्रदीप	वैज्ञानिक-डी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. दीपेश पंडित	वैज्ञानिक-डी, पीएमसीई प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. सतदल चक्रवर्ती	वैज्ञानिक-डी, फार्म प्रबंधन	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. एस. सरकार	वैज्ञानिक-डी, प्रशिक्षण प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. के. सुरेश	वैज्ञानिक-सी, एमबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. एन. चन्द्रकांत	वैज्ञानिक-सी, एसबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. शफी अफरोज	वैज्ञानिक-सी, एसईईएम प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. पूजा माकवाना	वैज्ञानिक-सी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. के. राहुल	वैज्ञानिक-सी, रेशमकीट रोगनिदान अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. यल्लप्पा हरिजन	वैज्ञानिक-वी, एमबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. परमेश्वर नायेक	वैज्ञानिक-बी, प्रशिक्षण प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	श्री खुसरु आलम	वैज्ञानिक-बी, पौधा संरक्षण	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. थंगजम रंजीता देवी	वैज्ञानिक-बी, एसबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं,

			बहरमपुर
	डॉ. दीपिका कुमार उमेश	वैज्ञानिक-बी, एमबीजी अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. रविराज वी. एस.	वैज्ञानिक-बी, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. मिहिर राभा	वैज्ञानिक-बी, रेशमकीट रोगनिदान अनुभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	डॉ. हरिश बाबु	वैज्ञानिक-बी, क्षेत्रेउअके- कलिम्पोंग	क्षेत्रेउअके- कलिम्पोंग
	सुश्री टी. सिरीषा	आशुलिपिक ग्रेड-II	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर
	सुश्री सुरभि घोष	जेआरएफ, जैव-प्रौद्योगिकी प्रभाग	केरेउअवप्रसं, बहरमपुर